© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS
ISSN: 2348 - 5612
https://urr.shodhsagar.com

SHODH SAGAR
International Publications

Original Article	Refereed & Peer Reviewed	Vol. 11, Issue: 01	Jan - Mar 2024

Published: Feb 12, 2024

प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं में अपने व्यवसाय के प्रति कार्य संतोष: एक समीक्षा अध्ययन

Dr. Siyaram Yadav[1], Suneeta Choubey[2]
[1]Associate Professor, Swami Vivekanand University Sagar M.P
[2]Research Scholar, Swami Vivekanand Sagar M.P.

How to cite:
Pathak, R.K (2024). Film and Social Change: Exploring the Impact of Documentaries on Activism. *Universal Research Reports, 11(1), 93-104.*

सारांश

इस समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य प्रासंगिक साहित्य की जांच करके प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करना है। अध्ययन में कार्य-जीवन संतुलन, पेशेवर विकास के अवसर, नेतृत्व समर्थन और नौकरी की सुरक्षा जैसे कारकों को समझने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है, जो प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। यह उन चुनौतियों और अवसरों की भी पड़ताल करता है जो प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली के भीतर सामना करना पड़ता है। मौजूदा शोध की व्यापक समीक्षा के माध्यम से, यह अध्ययन प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि की बहुमुखी प्रकृति को प्रकट करता है। कई प्रमुख विषयों की पहचान की जाती है, जिसमें सहायक कार्य वातावरण का महत्व, समावेशी नेतृत्व और शिक्षा के क्षेत्र में महिला शिक्षकों के अद्वितीय योगदान की मान्यता शामिल है।

कीवर्ड: महिला शिक्षक, नौकरी की संतुष्टि, कार्यजीवन संतुलन, पेशेवर विकास

1. परिचय

महिला शिक्षकों ने शिक्षा प्रणालियों के भीतर लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे पूर्वाग्रहों को खत्म करने और समावेशी कक्षाएं बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम करते हैं जहां सभी छात्र मूल्यवान और सम्मानित महसूस करते हैं। वे छात्रों के बीच समानता और निष्पक्षता को बढ़ावा देते हुए पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और रूढ़िवादिता को चुनौती देते हैं। महिला शिक्षक शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, सीखने के माहौल को समृद्ध करने के लिए अपने अद्वितीय दृष्टिकोण, शल और अनुभव लाती हैं। उनका प्रभाव शिक्षाविदों से आगे बढ़कर छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है।

1.1. समाज में महिला शिक्षकों का महत्व

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

महिला शिक्षक कई कारणों से समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं: [1]

- प्रेरणास्रोत और प्रेरणा: महिला शिक्षक विशेष रूप से युवा बालिकाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणास्रोत के रूप में काम करती हैं। महिलाओं को अधिकार और विशेषज्ञता के पदों पर देखकर बालिकाओं को अपनी क्षमता पर विश्वास करने और लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- शिक्षा और सशक्तिकरण: बालिकाओं को शिक्षित और सशक्त बनाने में महिला शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे सुरक्षित और सहायक शिक्षण वातावरण बनाते हैं जहां बलिकाएं बढ़ सकती हैं, सीख सकती हैं और खुद को अभिव्यक्त कर सकती हैं। शोध से पता चलता है कि जब लड़कियों को शिक्षा तक पहुंच मिलती है, तो उनके जीवन के परिणाम बेहतर होते हैं, जो समाज के समग्र विकास और प्रगति में योगदान देता है।
- पोषण और भावनात्मक समर्थन: महिला शिक्षक अक्सर अपनी कक्षाओं में पोषण गुण और देखभाल करने वाला दृष्टिकोण लाती हैं। वे छात्रों को भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, एक सकारात्मक और समावेशी सीखने का माहौल बनाते हैं। यह छात्रों के समग्र कल्याण, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मसम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास होता है।
- विविध दृष्टिकोण और अनुभव: महिला शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अद्वितीय दृष्टिकोण और अनुभव लाती हैं। उनकी विविध पृष्ठभूमि और जीवन के अनुभव सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करते हैं, छात्रों के बीच समावेशिता, सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देते हैं।

नेतृत्व और परामर्श: महिला शिक्षक महिला शिक्षकों के भीतर प्रभावी नेताओं और संरक्षक के रूप में काम कर सकती हैं और शिक्षा प्रणाली में उनकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए समान अवसर, समर्थन और संसाधन प्रदान कर सकती हैं। उनका योगदान अगली पीढ़ी के दिमाग और भविष्य को आकार देने, सभी के लिए एक समावेशी और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा देने में अमूल्य है।

1.2. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि कारकों में अंतर

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि कारकों में कई अंतर हैं। इन मतभेदों को विभिन्न कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है जैसे कि उनके काम की प्रकृति, उनके सामने आने वाली चुनौतियां और शिक्षा प्रणाली के भीतर उनकी भूमिका। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि कारकों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर यहां दिए गए हैं: [2]

1. कक्षा नियंत्रण: प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को अक्सर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की तुलना में बड़े वर्ग के आकार और अधिक विविध छात्र आबादी से निपटना पड़ता है। इससे प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए तनाव के उच्च स्तर और कम नौकरी की संतुष्टि हो सकती है क्योंकि उन्हें

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

कक्षा नियंत्रण बनाए रखने और प्रभावी सीखने के परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए अधिक चुनौतीपूर्ण लग सकता है।

2. शिक्षण विधियां: प्राथमिक स्तर के शिक्षक सीखने और विकास की नींव रखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें अक्सर युवा छात्रों को व्यस्त रखने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना शामिल होता है। दूसरी ओर, माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को अपने शिक्षण विधियों में अधिक लचीलापन हो सकता है और वे विशिष्ट विषय मामलों में अधिक गहराई से उतर सकते हैं। शिक्षण दृष्टिकोण में यह अंतर नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि शिक्षकों के पास कुछ शिक्षण शैलियों या विषयों के लिए प्राथमिकताएं हो सकती हैं।
3. पाठ्यक्रम और विषय विशेषज्ञता: माध्यमिक स्तर के शिक्षक अक्सर गणित, विज्ञान या साहित्य जैसे विशिष्ट विषयों में विशेषज्ञ होते हैं, जबकि प्राथमिक स्तर के शिक्षक आम तौर पर विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को संभालते हैं। किसी विशेष विषय में यह विशेषज्ञता और विशेषज्ञता प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की तुलना में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को पूर्ति और व्यावसायिक विकास की अधिक भावना प्रदान कर सकती है।
4. छात्र बातचीत: छात्र बातचीत की प्रकृति प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के बीच भिन्न होती है। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के पास आमतौर पर अपने छात्रों के साथ अधिक प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत बातचीत होती है, क्योंकि वे दिन का अधिकांश समय एक ही कक्षा के साथ बिताते हैं। दूसरी ओर, माध्यमिक स्तर के शिक्षक पूरे दिन कई कक्षाओं के साथ बातचीत करते हैं, और छात्रों के साथ उनका संबंध समग्र के बजाय अधिक विषय-केंद्रित होता है। छात्र बातचीत की गहराई और गुणवत्ता में अंतर नौकरी की संतुष्टि में भिन्नता में योगदान कर सकता है।
5. आजीविका उन्नति के अवसर: कई शिक्षा प्रणालियों में, माध्यमिक स्तर के शिक्षण पद प्राथमिक स्तर के पदों की तुलना में आजीविका की उन्नति के लिए अधिक अवसर प्रदान करते हैं। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के पास नेतृत्व की भूमिका निभाने, विभाग प्रमुख बनने या स्कूल या जिले के भीतर उच्च पदों का पीछा करने का विकल्प हो सकता है। विकास और प्रगति के ये अवसर माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को बढ़ा सकते हैं।
6. छात्र की उम्र और विकास के चरण: प्राथमिक स्तर के शिक्षक अक्सर युवा छात्रों के साथ काम करते हैं जो अपनी शैक्षिक यात्रा के शुरुआती चरणों में हैं। यह पुरस्कृत और चुनौतीपूर्ण दोनों हो सकता है, क्योंकि प्राथमिक स्तर के शिक्षक युवा दिमाग को आकार देने और छात्रों को बुनियादी कौशल विकसित करने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरी ओर, माध्यमिक स्तर के शिक्षक पुराने छात्रों के साथ काम करते हैं जो वयस्कता की ओर बढ़ रहे हैं। उनके काम में महत्वपूर्ण शैक्षणिक और व्यक्तिगत निर्णयों के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

करना शामिल हो सकता है, जो पूर्ति की भावना प्रदान कर सकता है और उनकी नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर सकता है।

7. अनुदेशात्मक स्वायत्तता: माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को आमतौर पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की तुलना में अधिक अनुदेशात्मक स्वायत्तता होती है, जिन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम और शिक्षण रणनीतियों का अधिक सख्ती से पालन करना पड़ सकता है। निर्देशात्मक तरीकों पर अधिक नियंत्रण रखने और अपने छात्रों की जरूरतों और हितों के अनुकूल होने की क्षमता माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच उच्च नौकरी की संतुष्टि में योगदान कर सकती है।
8. भूमिका की जटिलता: प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में अक्सर शिक्षण के अलावा कई भूमिकाएं होती हैं, जैसे कि कक्षा की गतिशीलता का प्रबंधन करना, माता-पिता के साथ संवाद करना और सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना। प्राथमिक स्तर के शिक्षण के लिए एक व्यापक कौशल समुच्चय और कई जिम्मेदारियों को निभाने की क्षमता की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अक्सर अधिक केंद्रित अनुदेशात्मक भूमिका होती है। जटिलताओं और जिम्मेदारियों की विविधता नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर सकती है, कुछ शिक्षकों को प्राथमिक स्तर के शिक्षण की बहुआयामी प्रकृति में पूर्ति मिलती है, जबकि अन्य माध्यमिक स्तर के शिक्षण की विशेषज्ञता पसंद कर सकते हैं।
9. बाहरी दबाव और आकलन: प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को अपने छात्रों के प्रदर्शन पर मानकीकृत परीक्षण और आकलन से बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ सकता है। यह दबाव नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर सकता है क्योंकि शिक्षकों को लग सकता है कि उनकी शिक्षण प्रभावकारिता केवल इन परीक्षणों द्वारा मापी जाती है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को भी मूल्यांकन का सामना करना पड़ता है, लेकिन उनके पास वैकल्पिक मूल्यांकन विधियों का पता लगाने और छात्र विकास और विकास के व्यापक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के अधिक अवसर हो सकते हैं।
10. व्यावसायिक सहयोग: माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के पास अक्सर अन्य विषय शिक्षकों के साथ सहयोग के लिए अधिक अवसर होते हैं, क्योंकि वे विषय विभागों या संगठनों के अंदर काम करते हैं। यह सहयोग विचारों, संसाधनों और व्यावसायिक समर्थन को साझा करने का कारण बन सकता है, जो नौकरी की संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के पास विषय-विशिष्ट सहयोग के लिए कम अवसर हो सकते हैं, लेकिन वे अभी भी अपने ग्रेड स्तर या स्कूल के भीतर अंतर-अनुशासनात्मक सहयोग और समुदाय-निर्माण में संलग्न हो सकते हैं।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जबकि ये अंतर प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित कर सकते हैं, व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यक्तिगत कारक

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नौकरी की संतुष्टि एक जटिल और बहुमुखी निर्माण है, और इसे प्रभावित करने वाले कारक एक ही शिक्षण स्तर के भीतर व्यक्तियों के बीच व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं। [3]

2. अध्ययन के उद्देश्य

महिला शिक्षकों और शिक्षा और समाज के लिए उनके लाभों के बारे में अध्ययन करना
प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के नौकरी संतुष्टि स्तर के बारे में अध्ययन करना
महिला शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना

3. साहित्य की समीक्षा

इस अध्ययन का उद्देश्य महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के संकेतकों को समझना, महिला शिक्षकों के संतुष्टि स्तर का पता लगाना, नौकरी के असंतोष के पीछे के कारणों का पता लगाना और संबंधित क्षेत्र में कुछ सिफारिशें देना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए संबंधित क्षेत्र के सरकारी कॉलेजों की महिला शिक्षकों से आंकड़ा एकत्र किया जाता है। उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक नमूने का उपयोग किया गया है और नमूना आकार सीमा 50 है। एक अच्छी तरह से नियोजित प्रश्नावली जिसमें आंकड़ा एकत्र करने के लिए कुछ जनसांख्यिकीय और ज्यादातर पैमाने आधारित प्रश्न शामिल हैं, ने कुछ सामान्य सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके इसका विश्लेषण किया। अनुभवजन्य अध्ययन में कुछ कारक पाए गए हैं जो महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करते हैं; इनमें वेतन, सुरक्षा, कॉलेज प्रतिष्ठा, मातृत्व अवकाश, आवास सुविधा, परिवहन सुविधा आदि शामिल हैं। [4]

वर्तमान शोध का उद्देश्य सार्वजनिक और निजी स्कूल के महिला संतुष्टि स्तर की तुलना करना है। सार्वजनिक और निजी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की सीमा को वेतन, पदोन्नति, प्रशिक्षण और आजीविका विकास के अवसर, पर्यवेक्षक व्यवहार, सहकर्मी व्यवहार, काम के घंटे, काम करने की स्थिति और संगठनात्मक पहलुओं जैसे विभिन्न पहलुओं के साथ मापा गया है। सार्वजनिक और निजी स्कूल के कर्मचारियों के बीच नौकरी की संतुष्टि के स्तर में अंतर का पता लगाने के लिए दोनों स्कूलों की नौकरी की संतुष्टि के साथ जनसांख्यिकीय चर की तुलना करके मूल्यांकन किया गया था। एमएनोवा सांख्यिकीय उपकरण यह देखने के लिए लागू किया गया था कि क्या दोनों स्कूलों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है। [5]

वर्तमान अध्ययन कामरूप जिले में गुवाहाटी शहर के हाई स्कूल के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की जांच करने और नौकरी की संतुष्टि के स्तर पर लिंग और स्कूल के प्रकार के प्रभाव का अवलोकन करने का एक प्रयास है। वर्तमान अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि और सरल यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग किया गया था। नमूने में 100 हाई स्कूल शिक्षक शामिल थे, जिनमें से 50 पुरुष थे और 50 महिलाएं थीं। अन्वेषक ने आंकड़ा एकत्र करने के लिए स्व-संरचित मानकीकृत आंकड़ा एकत्र करने वाले उपकरणों का उपयोग किया है। परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए,

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया है। माध्य का उपयोग करके आंकड़ा एकत्र और विश्लेषण किया गया था। एसडी और टी-परीक्षण द्वारा किए गए, अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि महिला शिक्षक अपने पुरुष की तुलना में बेहतर नौकरी की संतुष्टि का प्रदर्शन करती हैं, और उनके स्कूल के प्रकार के संबंध में नौकरी की संतुष्टि में महत्वपूर्ण अंतर होता है। [6]

इस शोध का उद्देश्य सुरिगाओ डेल सुर प्रांत के सबसे उत्तरी भाग को सौंपे गए महिला शिक्षकों के बीच कार्य-जीवन संतुलन और संतुष्टि के स्तर की सीमा का अध्ययन करना था और यह निर्धारित करना था कि क्या इन दो चर के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक मानक और सहसंबंध विधि का उपयोग किया गया था, और पहले प्रश्नावली के एक संशोधित संस्करण का उपयोग किया गया था। चुने गए 226 महिला शिक्षकों में से 210 ने जवाब दिया और भाग लिया। प्रश्नावली से एकत्र किए गए आंकड़ों को तालिका, सारणीबद्ध, विश्लेषण और तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया था। परिणामों से पता चला है कि अधिकांश शिक्षकों ने व्यक्तिगत और कार्य वातावरण के तहत कार्य-जीवन संतुलन के लिए "मध्यम सीमा" का उत्तर दिया और ज्यादातर संतुष्टि के स्तर पर "संतुष्ट" थे। यह निष्कर्ष निकाला गया कि कार्य-जीवन संतुलन और संतुष्टि के स्तर के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था। इस अध्ययन में कार्य-जीवन संतुलन और संतुष्टि के स्तर के बीच महत्वपूर्ण संबंध का परीक्षण किया गया था, और यह पाया गया कि सुरिगाओ डेल सुर प्रांत के सबसे उत्तरी भाग में सौंपे गए महिला शिक्षकों के बीच कार्य-जीवन संतुलन और संतुष्टि के स्तर के बीच एक संबंध था। [7]

यह अध्ययन बदलती नौकरी प्रोफाइल के जवाब में महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की जांच करने के लिए आयोजित किया जाता है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, मलप्पुरम जिले के 10 कॉलेजों से 90 महिला शिक्षकों का चयन किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए नौकरी संतुष्टि मॉडल का भी उपयोग किया गया था। अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि नौकरी की संतुष्टि एक दृष्टिकोण है जो कई कारकों से उत्पन्न होता है। इस प्रकार अध्ययन से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस पेशे के प्रति महिला शिक्षकों का समग्र संतुष्टि स्तर संतोषजनक है और अधिकांश शिक्षक अपने अभिनव विचारों और ज्ञान को अन्य शिक्षकों के साथ साझा करने के लिए तैयार नहीं हैं। [8]

प्रशिक्षक होने का व्यवसाय ग्रह पर सबसे महत्वपूर्ण और परीक्षण है। प्रशिक्षक सूचना का कैप्सूलीकरण है, जो युवा द्रव्यमान की मदद और मार्गदर्शन कर सकता है। शिक्षक समाज के भविष्य के मूल निवासियों का निर्माता है। वह एक स्कूल की बारी है। शिक्षा की प्रकृति काफी हद तक प्रशिक्षकों की प्रकृति से नियंत्रित होती है जो इसे बनाते हैं। एक प्रशिक्षक की पहचान, आचरण, आश्वासन, जिम्मेदारी, कार्य अनुमान प्रशिक्षण की प्रकृति को तय करने में एक मौलिक महत्व की उम्मीद करते हैं। प्रशिक्षण की कोई भी व्यवस्था अपने शिक्षक से ऊपर नहीं जा सकती है। कम भावना वाले और अपने काम में प्रोत्साहन महसूस करने वाले शिक्षक, प्रशिक्षण और राष्ट्रीय विकास की प्रकृति को प्रभावित करते हैं।

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

सिवाय इसके कि प्रशिक्षक को अविश्वसनीय रूप से राजी किया जाता है, पूरी तरह से काम से जुड़ा हुआ है और प्रस्तुत किया गया है, शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी सुधार के परिणामस्वरूप होने वाला हर एक दूसरा प्रयास निस्संदेह बेकार होगा। इस प्रकार इस महत्वपूर्ण मुद्दे के कारणों को अलग करना महत्वपूर्ण है। उन घटकों को तय करना जो शिक्षकों को अपने विशेष रोजगार में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए संकल्पित करते हैं, शिक्षाप्रद ओवरसियर को चिंता करने की आवश्यकता है कि प्रशिक्षकों की जिम्मेदारी की असामान्य स्थिति को कैसे उत्साहित, समन्वित और जारी रखा जा सकता है। [9]

शिक्षक एक राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं। किसी देश के विकास में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है ताकि उनके कौशल में सुधार के लिए आकलन करने की आवश्यकता हो। इस पेपर का उद्देश्य निजी और सरकारी स्कूलों के बीच महिला शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की तुलना उन्हें प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के बारे में करना और नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना है। अनुसंधान का क्षेत्र फतेहाबाद जिला है। यह अन्वेषणात्मक सह वर्णनात्मक अध्ययन है। हरियाणा के फतेहाबाद जिले में विभिन्न निजी स्कूलों और सरकारी स्कूलों से 200 उत्तरदाताओं के नमूने एकत्र किए गए हैं। आंकड़ा संग्रह के लिए एक स्व-संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए एसपीएसएस का उपयोग किया जाता है जिसके द्वारा वर्णनात्मक आंकड़े और टी-परीक्षण लागू किए गए हैं। निष्कर्षों से पता चला है कि सरकारी और निजी स्कूलों द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के संबंध में महिला शिक्षकों के संतुष्टि स्तर में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है। [10]

शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि आत्म-दृष्टिकोण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और किसी भी राष्ट्र में एक मजबूत शैक्षिक प्रणाली का निर्माण करती है। वर्तमान अध्ययन में जांचकर्ताओं द्वारा पश्चिम बंगाल में विभिन्न प्रकार के सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में काम करने वाली महिला स्कूल शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के स्तर का आकलन करने का प्रयास किया गया है, जो कुछ व्यक्तिगत और सामाजिक-जनसांख्यिकीय चर से संबंधित है। शोधकर्ताओं ने पश्चिम बंगाल में "पश्चिम बंगाल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी" और "पश्चिम बंगाल काउंसिल ऑफ हायर सेकेंडरी एजुकेशन" के तहत 16 सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों से 250 कार्यरत महिला सहायक शिक्षकों का चयन किया। जांचकर्ताओं ने एक स्व-निर्मित प्रश्नावली विकसित की है, जिसके बाद लिकट के पांच-बिंदु पैमाने यानी दृढ़ता से सहमत (एसए), सहमत (ए), तटस्थ (एन), असहमत (डी) और दृढ़ता से असहमत (एसडी) शामिल हैं।

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि शोधकर्ता उत्तर 24 परगना जिले, पश्चिम बंगाल, भारत में विभिन्न सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों से महिला स्कूल शिक्षकों के 17 उपयुक्त शोध प्रश्नों की मदद से संतोषजनक नौकरी के स्तर का विश्लेषण करता है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए वर्तमान अध्ययन में जांचकर्ताओं द्वारा माध्य, एसडी और टी-परीक्षण का

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

उपयोग किया गया है। अन्वेषक पांच-आयाम के आधार पर महिला स्कूल शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के स्तर को मापने के लिए विभिन्न कारकों का चयन करता है जो लिंग भिन्नता, वेतन और बोनस, संस्थागत वातावरण, सहकर्मियों के साथ समायोजन और सहयोग और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण हैं। आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक और साथ ही अनुमानित आंकड़ों दोनों का उपयोग करके किया गया था और अध्ययन की पद्धति एक मिश्रित प्रकार है जिसमें व्याख्यात्मक, दस्तावेजों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, साक्षात्कार, सर्वेक्षण प्रश्नावली, अवलोकन और प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों, जैसे किताबें, विश्वविद्यालय समाचार, विशेषज्ञ राय, लेख, पत्रिकाएं, थीसिस और वेबसाइट आदि शामिल हैं। अंत में, सार्थक सुझाव दिए जाते हैं। [11]

इस अध्ययन ने नाइजीरिया के ईडो राज्य में सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नौकरी प्रदर्शन पर वैवाहिक स्थिति के प्रभाव की जांच की। अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक था। जनसंख्या में नाइजीरिया के एडो राज्य में पूरे चार हजार, चार सौ छियानबे (4496) सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। नमूने में एडो राज्य के पांच सौ अट्ठानवे (598) सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालयों में एक हजार, तीन सौ अड़तालीस (1348) शिक्षक शामिल थे। अध्ययन के लिए आँकड़े एकत्र करने के लिए "शिक्षकों की जीवनी विशेषताओं का प्रभाव" शीर्षक से एक प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। आंकड़ों का विश्लेषण “प्रतिशत स्कोर, मल्टीपल रिग्रेशन और टी-परीक्षण” का उपयोग करके किया गया था। परिणाम से पता चला कि वैवाहिक स्थिति का ईडो राज्य में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नौकरी के प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है। निष्कर्षों के आधार पर, यह सिफारिश की गई थी कि स्कूलों में परामर्शदाताओं के रोजगार से शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक और घरेलू मुद्दों से निपटने में मदद मिलेगी। [12]

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या केरल की महिला छात्रों के अकादमिक आत्मविश्वास और व्यक्तिपरक कल्याण में कोई महत्वपूर्ण अंतर है और दोनों के बीच संबंध का पता लगाना था। अध्ययन के नमूने में 100 महिला छात्र शामिल थे जो केरल भर में विभिन्न नियमित पाठ्यक्रमों से गुजरती हैं। आंकड़ा “अकादमिक आत्मविश्वास पैमाने (हमीद और साफिया, 2017) और सब्जेक्टिव वेल-बीइंग इन्वेंट्री (हमीद एंड साफिया, 2017)” का उपयोग करके एकत्र किया गया था। सांख्यिकीय विश्लेषण में वर्णनात्मक सांख्यिकी, माध्य अंतर विश्लेषण और सहसंबंध विश्लेषण की गणना शामिल थी। अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि वैवाहिक और आर्थिक स्थिति के संबंध में केरल की विवाहित और अविवाहित महिला छात्रों के शैक्षणिक आत्मविश्वास और व्यक्तिपरक कल्याण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है और उनके शैक्षणिक आत्मविश्वास और व्यक्तिपरक कल्याण मामूली रूप से सहसंबद्ध हैं। [13]

पेपर में, शोधकर्ता ने 792 शिक्षकों के नमूने पर उनकी वैवाहिक स्थिति के अनुसार व्यावसायिक समायोजन स्थिति और शिक्षकों के स्तर का आकलन करने का प्रयास किया। शिक्षकों को दो श्रेणियों

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

में वर्गीकृत किया गया है अर्थात् विवाहित और अविवाहित। शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए, एक उपकरण अर्थात "शिक्षक व्यावसायिक समायोजन पर मैनुअल" का उपयोग किया गया था जिसे अन्वेषक द्वारा तैयार और मानकीकृत किया गया था। उपकरण की विश्वसनीयता और वैधता क्रमशः 0.89 और 0.66 पाई गई। पर्सेंटाइल रैंक और व्यावसायिक समायोजन स्कोर के आधार पर, शिक्षकों की व्यावसायिक समायोजन स्थिति को तीन स्तरों में वर्गीकृत किया गया है अर्थात अच्छी तरह से समायोजित, औसत-समायोजित कम-समायोजित। आंकड़ों का विश्लेषण एसपीएसएस संस्करण 13.0 और प्रिज्म 3.0 के माध्यम से टी-परीक्षण और ×2 परीक्षण द्वारा किया गया था। इस अध्ययन से पता चलता है कि विवाहित और अविवाहित शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। यहां तक कि, दो समूहों के व्यावसायिक समायोजन स्तर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शादी शिक्षकों के आजीविका से संबंधित नहीं है। [14]

प्रौद्योगिकी के आज तेजी से बढ़ते समय में हम सभी एक आम समस्या से गुजर रहे हैं कि व्यावसायिक आजीविका जीवन और व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बीच सही संतुलन कैसे बनाए रखा जाए। इसे कार्य-जीवन संतुलन कहा जाता है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पंजाब राज्य में विवाहित और अविवाहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों के कार्य-जीवन संतुलन (डब्ल्यूएलबी) को समझना है। यह पेपर मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों और माध्यमिक आंकड़ों पर आधारित है। माध्यमिक आंकड़ा विभिन्न लेखों, शोध पत्रों और पत्रिकाओं से एकत्र किया गया था। प्राथमिक आंकड़ा पर चर्चा की गई है जो प्रश्नावली, व्यक्तिगत साक्षात्कार और विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के साथ की गई बातचीत की मदद से एकत्र किया गया है। [15]

इस शोध पत्र का उद्देश्य विवाहित महिला कॉलेज शिक्षक पर मौजूदा साहित्य की समीक्षा करना है और आगे के शोध के लिए एक नई अंतर्दृष्टि और भविष्य की दिशाओं को विकसित करने के लिए इसके निष्कर्षों की पड़ताल करना है। इस शोध पत्र में सभी मौजूदा साहित्य निष्कर्षों को व्यवस्थित तरीके से प्रदर्शित करने की कोशिश की गई है। अतीत को जाने बिना हम किसी भी क्षेत्र में कुछ नया नहीं कर सकते। यदि हम कुछ नया करना चाहते हैं, तो क्षेत्र के विशेष विषय और उससे संबंधित साहित्य के अतीत की खोज करना आवश्यक है। साहित्य की समीक्षा इस क्षेत्र में आगे के शोध के लिए दूसरों की सहायता करती है। [16]

यह शोध विभिन्न दृष्टिकोणों से महिलाकरण के बारे में पड़ताल करता है जो शिक्षा प्रणालियों के विस्तार के भीतर महिला शिक्षकों की भूमिका पर अधिकांश प्रवचन पर हावी है, विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा प्रावधान के भीतर। भारत के मामले में, अध्ययन केरल और राजस्थान के विपरीत राज्य-स्तरीय अनुभवों पर केंद्रित है; केरल अपने कार्यबल में महिला शिक्षकों के उच्च प्रतिशत के लिए जाना जाता है, जबकि, राजस्थान में, महिला शिक्षक कम हैं। अध्ययन लैंगिक समानता पर एक व्यापक दृष्टिकोण

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

के माध्यम से मुद्दों का विश्लेषण करता है क्योंकि यह न केवल शिक्षा से संबंधित है, बल्कि रोजगार और महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण से भी संबंधित है। श्रीलंका और भारतीय राज्य केरल में, स्वतंत्रता के बाद से उच्च महिला शिक्षक संख्या मौजूद है, जबकि अन्य देशों में यह मुद्दा हाल ही में है। [17]

4. निष्कर्ष

समीक्षा अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि न केवल व्यक्तिगत कल्याण के लिए बल्कि शिक्षा की समग्र गुणवत्ता के लिए भी महत्वपूर्ण है। संतुष्ट शिक्षकों को लगे हुए, प्रेरित होने और बेहतर निर्देश प्रदान करने की अधिक संभावना है, जिससे छात्र परिणामों में सुधार होता है। अध्ययन इस क्षेत्र में आगे के शोध की आवश्यकता को भी इंगित करता है, क्योंकि अध्ययनों के बीच सीमित डेटा और विसंगतियां मौजूद हैं। विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स और सांस्कृतिक संदर्भों में महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले विशिष्ट कारकों का पता लगाना महत्वपूर्ण है, साथ ही उनकी संतुष्टि और समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए प्रभावी रणनीतियों और हस्तक्षेपों की जांच करना महत्वपूर्ण है। यह समीक्षा अध्ययन प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को समझने और संबोधित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है ताकि उनके पेशेवर विकास का समर्थन किया जा सके, शैक्षिक वातावरण में सुधार किया जा सके, और अंततः छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके।

संदर्भ

[1] A. B. Devi, “Job Satisfaction Among Teaching Staff in Higher Education in Manipur,” vol. 4, no. March, pp. 30–35, 2017.

[2] S. Tasnim, “Job Satisfaction among Female Teachers : A study on primary schools in Bangladesh .,” *Education*, pp. 1–84, 2006, [Online]. Available: https://bora.uib.no/bitstream/handle/1956/1474/Masteroppga?sequence=1.

[3] F. Kelleher, *Women and the Teaching Profession: Exploring the Feminisation Debate*, vol. 20, no. 2. 2012.

[4] M. Masud, R. M. Rafiul, and I. M. J. Ali, “Job satisfaction among female teachers in Rangpur, Bangladesh,” *Eur. J. Bus. Manag.*, vol. 10, no. 16, pp. 28–40, 2018, [Online]. Available: www.iiste.org.

[5] U. T. Shaikh, “International Journal of Research Publication and Reviews A Comparative Study on Job Satisfaction of Female Teachers in Public and Private School with Reference to Nagpur City .,” *Int. J. Res. Publ. Rev.*, vol.

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

4, no. 7, pp. 3035–3040, 2023.

[6] R. Medhi, "Job Satisfaction Among High School Teachers : A Study in the Kamrup District of Assam," *Int. J. Res. Anal. Rev.*, vol. 5, no. 4, pp. 8–11, 2018.

[7] J. O. Mercado, "Work Life Balance and Level of Satisfaction Among Women Teachers Assigned In The Northernmost Part of The Province of Surigao Del Sur, Philippines," *South East Asian J. Manag.*, vol. 13, no. 2, pp. 140–150, 2019, doi: 10.21002/seam.v13i2.11344.

[8] SHAHANASBEEGAM P.P and S. E.S, "Job Satisfaction of Women Teachers With Special Reference To Malappuram District," *Int. J. Hum. Resour. Manag.*, vol. 6, no. 6, pp. 1–8, 2017, [Online]. Available: http://iaset.us/view_archives.php?year=2017&jtype=2&id=34&details=archives.

[9] S. Jaiswal, "A STUDY ON JOB SATISFACTION AMONG FEMALE TEACHERS," vol. 9, no. 2, pp. 1–4, 2018.

[10] A. Kumar, "Job Satisfaction among Female Teachers: A comparative study," *Int. J. Core Eng. Manag.*, vol. 2, no. 5, pp. 50–63, 2015.

[11] D. Roy and K. Das, "Job Satisfaction among Female School Teachers in North 24 Parganas, West Bengal," *J. Xi'an Univ. Archit. Technol.*, vol. 12, no. July, pp. 271–281, 2020, doi: 10.37896/JXAT12.07/2329.

[12] I. B. Oselumese, O. Blessing, and O. Vinnela, "Marital Status and Teachers' Job Performance in Public Secondary Schools in Edo State," *IJournals Int. J. Soc. Relev. Concern*, vol. 4, no. 9, pp. 33–38, 2016.

[13] S. K. and D. A. Hameed, "HOW MARRIED AND UNMARRIED FEMALE STUDENTS OF KERALA DIFFERS IN THEIR ACADEMIC CONFIDENCE AND SUBJECTIVE WELL-BEING?," *EPRA Int. J. Multidiscip. Res. (IJMR)-Peer Rev. J.*, no. 2, pp. 198–210, 2020, doi: 10.36713/epra2013.

[14] S. K. Houseknecht and A. S. Macke, "Combining Marriage and Career: The Marital Adjustment of Professional Women," *J. Marriage Fam.*, vol. 43, no. 3, p. 651, 1981, doi: 10.2307/351766.

[15] H. Singh and R. Sharma, "Work Life Balance of Married and Unmarried University Teachers of Punjab State," *Int. J. Manag.*, vol. 11, no. 06, pp. 1112–

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

1123, 2020, doi: 10.34218/IJM.11.6.2020.099.

[16] M. Mili, "A Sociological Study of Married Female College Teacher : A Review Study," vol. 18, no. 7, pp. 504-511, 2021.

[17] D. P. K. Dhal, "Women and Teaching Profession," *Women Teach.*, 2016, doi: 10.1057/9781403984371.

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/